डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह

सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल॰ना॰मि॰वि॰वि॰दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 1.07.2020

व्याख्यान संख्या-1 (कुल सं. 37)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित-दुति होइ।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी

सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

प्रस्तुत दोहा कवि की रचना 'बिहारी सतसई' का मंगलाचरण है। प्रस्तुत दोहे में श्रीकृष्ण-प्रिया राधा को श्रीकृष्ण की अपेक्षा भी महत्तर मान देते हुए उनकी स्तुति की गयी है। यह दोहा विशिष्ट अर्थ-गर्भित है। इसमें अर्थ के कई आयाम हैं जिनमें से सभी हैं तो स्तुति परक ही, परंतु कई प्रकार से चमत्कार उत्पन्न करके मंगलाचरण के साथ-साथ कवि के रीतिसिद्ध होने की घोषणा भी स्पष्ट रूप से कर डालते हैं।

श्रीराधा की स्तुति करते हुए कवि कहते हैं कि जिनके गोरे शरीर की छाया पड़ने से श्याम वर्ण श्रीकृष्ण की छवि हरे रंग की हो जाती है, वह चतुरा राधा मेरी सांसारिक बाधा दूर करें! पीले और नीले रंग के मेल से हरा रंग बनना लोक-प्रसिद्ध है। इसी प्रसिद्धि का सहारा लेते हुए कवि ने शाब्दिक चमत्कार उत्पन्न किया है कि गोरी राधा की छाया पड़ने से श्रीकृष्ण के शरीर की छवि हरे रंग की हो जाती है। यहाँ शरीर की छाया शरीर पर पड़ने की बात कही गयी है।

दूसरा अर्थ यह है कि जब राधा की छवि श्रीकृष्ण की आँखों में पड़ती है तो श्रीकृष्ण का हृदय आनंदित हो जाता है, वे हर्षित हो जाते हैं। ऐसी राधा मेरी सांसारिक बाधा दूर करें!

तीसरा अर्थ यह है कि श्रीराधा के रूप का ध्यान करने से जहाँ कहीं श्यामता है अर्थात कल्मष, पातक, दुःख आदि हैं उन सबकी द्‌युति का हनन हो जाता है अर्थात् वे सभी प्रभावहीन हो जाते हैं। ऐसी राधा मेरी सांसारिक बाधा दूर करें! यहाँ झाँई का अर्थ ध्यान है। प्राकृत व्याकरण के अनुसार ध्यान शब्द का रूपांतरण भी झाँई के रूप में हो जाता है।

'भव-बाधा' का भी शाब्दिक अर्थ सांसारिक बाधा है, जिसका तात्पर्य कई टीकाकारों ने, जिनमें लाला भगवानदीन भी शामिल हैं, जन्म-मरण का कष्ट लिया है, परंतु यह दोहा चूँकि मंगलाचरण है, जिसका एक तात्पर्य ग्रंथ की निर्विघ्न पूर्णता भी होती है, तथा सांसारिक बाधा में दुःख-दारिद्र्य आदि भी शामिल होते हैं; अतः कवि इन सबको दूर कर ग्रंथ की निर्विघ्न पूर्ति की कामना करते हैं।